Journal of Advances and Scholarly Researches in Allied Education
Vol. XV, Issue No. 3, May-2018, ISSN 2230-7540

मीरा बाई

Murti*

Assistant Professor, Janta Girls PG College, Ellenabad, District-Sirsa, Haryana, India

सार – हिंदी के मध्ययुगीन भक्ति साहित्य में मीराबाई का स्थान विशिष्ट है| वे एक कृष्ण – भक्त कवयित्रि है| उन्होंने राजस्थान की वीरभूमि में सगुण भक्ति रस की कोमल धारा को प्रवाहित किया है|

----------X----------

प्रस्तावनाः-

हिन्दी साहित्य इतिहास का काल विभाजन आचार्य रामचन्द्र शुक्ल के द्वारा चार भागों में किया गया। उसका विवेचन हम इस प्रकार कर सकते हैं-

1) वीरगाथा काल

2) रीतिकाल

3) भक्तिकाल

4) गद्यकाल

भक्तिकाल में अनेक प्रमुख कवियों (संतों) की वाणी गुंजायमान हुई। सभी संत कवियों ने अपने पवित्र विचारों पर अपनी वाक शक्ति के माध्यम से सामान्य जनों में प्रवाहित किया। भक्तिकाल में श्री कबीर दास, भक्तों में शिरोमणी श्री तुलसीदास, वात्सल्य रस के सम्राट श्री सूरदास, रैदास आदि महान संतों का आविर्भाव हुआ। श्री कृष्ण की अनन्या भक्त मीराबाई जन्म भी इसी काल में हुआ। मीराबाई कृष्ण भक्ति की प्रमुख कवयित्री है। मीरा बाई अपने आराध्य भगवान श्री कृष्ण के प्रति माधुर्य भाव से समर्पित थी।

मीराबाई का जीवन परिचयः-

भक्तिकाल में श्री कृष्ण की पराकाष्ठा का प्रतीक और हिन्दी की महान कवयित्री मीराबाई का जन्म 1498 ई0 में जोधपुर में चैकड़ी नामक गांव में हुआ। इनका विवाह उदयपुर के राजा कुमार भोजराज जी के साथ हुआ था। मीराबाई बचपन से श्री कृष्ण की भक्ति में आसक्त हो गई थी। विवाह के थोड़े दिन बाद ही मीरा बाई के पति का स्वर्गवास हो गया था। पति के परलोक वास के पश्चात् इनकी भक्ति दिन-प्रति-दिन बढ़ती गई।

मीराबाई का घर से निकाला जानाः-

मीरा बाई अपने भगवान श्री कृष्ण के प्रेम में सांसारिक मोह माया को त्यागकर मग्न होकर नाचती थी। उनके परिवार के लोगों ने उनके इस व्यवहार से व्यथित होकर उन्हें विष देकर मारने का प्रयत्न किया। मीराबाई अपने परिवार के लोगों से विरक्त होकर द्वारका और वृंदावन चली गई। इसी दौरान उन्होंने तुलसीदास जी पत्र व्यवहार किया।

स्वस्ति श्री तुसली कुलभूषण दूषन हरन गोसाई।

बारहिं बार प्रनाम कर हूँ अब हरहूं सोक समुदाई।।

घर के स्वजन हमारे तेजे सबन्ह उपाधि बढ़ाई।

साधु सग अरू भजन करत माहिं देत कलेस महाई।।

मेरे माता-पिता के समहौ, हरि भक्तन्ह सुखदाई।

हमको कहा उचित करिबौ है, सो लिखिए समझाई।।

मीराबाई के पत्र का जवाब तुलसीदास जी के द्वारा इस प्रकार दिया गया-

जाके प्रिय न राम बैदेही।

सो नर तजिए कोटि बैरी सम जद्यपि परम सनेहा।।

नाते सबै राम के मनियत सुहृद सुसेव्य जहां लौ।

अंजन कहा आंखि जौ फूटै, बहुतक कहौ कहां लौ।।

मीराबाई की काव्य कृत्तियां-

www.ignited.in

1) नरसी जी रो मायरो

2) गीत गोविंद टीका

3) राग गोविन्द

4) राग सोरठ के पद

इन रचनाओं के अलावा मीराबाई के गीतों का संकलन 'मीरा बाई की पदावली' नामक ग्रन्थ में किया गया है।

मीराबाई की भक्तिः-

मीराबाई की भक्ति माधुर्य - भाव की है। वह श्री कृष्ण को अपने प्रियतम के रूप में स्वीकार करके उनकी पूजा करती थी। मीरा श्री कृष्ण के प्रेम में वियोग को महसूस करती हुई दर्द में तड़प जाती है और एक स्थान पर कहती है-

हेरी म्हारा दरद न जाण्यां कोय,

घायल री गत घायल जाण्यां, हिवडो अगण संयोग।

जौहर की गत जौहरी जाणै, क्या जाण्यां जिण खोय,

दरद की मारया दर पर डोल्यां, बैद मिल्या नहिं कोय।

पग घूँघरू बांध मीरा नाची रे।

मैं तो मेरे नारायण की आप ही हो गई दासी रे।

लोग कहै मीरा भई बावरी न्यात कहै कुलनासी रे।।

विष का प्याला राणाजी भेज्या पीवत मीरा हांसी रे।

'मीरा' के प्रभु गिरिधर नागर सहज मिले अविनासी रे।।

मीराबाई की भक्ति भावना में उनके वियोगी हृदय की पीड़ा उनकी वाक् धारा द्वारा प्रवाहित हुई। वह अपनी प्रत्येक भावना, व्यथा और समस्या अपने प्रभु गिरिधर नागर को ही सुनाती है। जन्म मरण के चक्र से मुक्त होने के लिए, वह अपने आराध्य श्री कृष्ण के श्री चरणों का ध्यान करने की प्रेरणा अपने मन को दे रही है।

भजन मन! चरण कँवल अविनासी।

जेताई दीसै धरणि गगन विच, तेता (इ) सब उठ जासी।।

इस देही का गरब न करण। माटी में मिल जासी।

यो संसार चहर की बाजी, साँझ पड़्यां उठ जासी।।

मीराबाई श्री कृष्ण के मिलन के लिए व्याकुल हृदय से पुकार रही है

दस बिनु दूखण लागै नैन।

जब के तुम बिछूरे प्रभु मोरे, कबहुँ न पायो चैन।।

सबद सुनत मेरी छतियां कांपै, मीठे-मीठे बैन।

विरह बिथा कासूं कहूं सजनी, बह गई करवत अैन।।

कल न परत पल, हरि मग जोवत, भई छमासी रैण।

मीरा के प्रभु कबरे मिलोगे, दुख मेटण सुख दैग।।

मीराबाई का काव्य राजस्थानी लहजे में ब्रहभाषा में लिखा गया जिसमें माधुर्य एवं भक्ति की अनन्त पवित्रता के साथ प्रेम ही गहन पीड़ा, विरह की आंतरिक अनुभूति और आध्यात्मिक उदातता हिन्दी साहित्य की अप्रतिम थाती मानी गई है। उनके पदों में संगीत रसज्ञों और साहित्य प्रेमियों को आत्मानंद से परिपूर्ण करने में आज भी सक्षम है।

निष्कर्षः-

भक्ति काल का साहित्य हिन्दी साहित्य की अनुपम एवं अद्वितीय धरोहर हैं जिसमें सगुण व निर्गुण काव्य के साहित्यकारों ने अर्थात काव्य साहित्य से हिन्दी भाषा को समृद्ध किया। सगुण काव्याधार में राम भक्तों के द्वारा दशरथ नंदन श्री राम के गुणों का बखान किया गया तथा कृष्ण भक्त कवियों के द्वारा यशोदानंदन श्री कृष्ण की लीलाओं को दर्शाया गया। मीराबाई की काव्य रचनाएं श्री कृष्ण के प्रति प्रेरयसी प्रीतम भावों से सराबोर श्रृंगार रस की विरह वेदना और अनन्त मिलन की इच्छा के साथ माधुर्य रस की प्रधानता से सामान्य जन के हृदयों की भक्ति की भावना से ओत प्रोत करती है। मीरा बाई ने साहित्य में संगीत व नृत्य रूपी कला से नया रंग भर दिया। मीरा बाई ने अपने गुरू रैदास से दीक्षा लेकर आध्यात्मिक भक्ति में अपना सम्पूर्ण जीवन समर्पित कर दिया। मीराबाई भक्तिकाल की अपूर्व में प्रसिद्ध कवयित्री है। उनकी काव्य रचनाओं में भक्ति रस की प्रमुखता व उदात्तता के कारण ही भक्तमाल में रामानंद, नाभादास जैसे भक्त कवियों के साथ मीरा बाई का वर्णन इस तथ्य को और की भी पुष्ट करता है।

संदर्भ सूचीः-

1) https://www.anhadkriti.com

www.ignited.in

2) मीरा, परिचय तथा रचनाएं - सं. सुदर्शन चोपड़ा

3) मीराबाई की सम्पूर्ण पदावली - सम्पादक रामकिशोर शर्मा, सुजीत कुमार

4) मीरा बाई और भक्ति की आध्यात्मिक अर्थनीति - कुमकुम संगारी

5) मीरा की पे्रेम साधना – डॉ. भुवनेश्वर नाथ मिश्र 'माधव'

6) मीरा बाई का काव्य, भक्ति एवं दार्शनिकता – डॉ. शैलेश के. मैहता

7) मीरा बाई की पदावली - हिन्दी साहित्य सम्मेलन प्रयाग

8) मीरा संचयन सम्पादक, नन्द चतुर्वेदी

9) हिन्दी साहित्य का इतिहास - आचार्य रामचन्द्र शुक्त

10) भूमिका – डॉ. रामस्वरूप चतुर्वेदी, प्रकाशन - लोकभारती प्रकाशन

Corresponding Author

Murti*

Assistant Professor, Janta Girls PG College, Ellenabad, District-Sirsa, Haryana, India